International Journal of Applied Research 2015; 1(9): 813-814

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(9): 813-814
www.allresearchjournal.com
Received: 27-06-2015
Accepted: 29-07-2015

डॉ० शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कागंड़ा हि० प्र०।

Correspondence
डॉ० शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कागंड़ा हि० प्र०।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की निबन्ध शैली

शिवदत्त शर्मा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्र हैं यदि यह कहा जाए कि वे सही अर्थों में आचार्य हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। हिन्दी आलोचना में उनका कोई सानी नहीं है।[1] आलोचना के अतिरिक्त जिस विधा के लिए उन्हें प्रतिष्ठा मिली वह है निबन्ध लेखन। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपनी मौलिक निबन्ध शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने हिन्दी में कई तरह के निबन्ध लिखे हैं परन्तु मनोवैज्ञानिक एवं वैचारिक निबन्धों के कारण उन्हें सर्वाधिक प्रतिष्ठा मिली। शुक्ल जी की भाषा परिष्कृत साहित्यिक हिन्दी भाषा है। इसे ही कुछ आलोचक परिनिष्ठित हिन्दी भी कहते हैं।उनके निबन्धों में संस्कृत निष्ठ हिन्दी का प्रयोग साधारणतः देखने को मिलता है।इसी तरह उनके निबन्ध लेखन में अनेक शैलियों के दर्शन होते हैं। शैली वास्तव में लिखने के ढंग को कहते हैं। प्रत्येक लेखक की अपनी अलग शैली होती है । सम्भवतः आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने गवेषणात्मक विषयों को अपने निबन्धों का विषय बनाया है इसी लिए उनकी भाषा–शैली अधिकतर संस्कृत निष्ठ दिखाई देती है। शुक्ल जी ने विषय के अनुसार प्रायः सभी शैलियों को अपनाया है जिनका विवरण इस प्रकार है–

1. तुलनात्मक शैली–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने विषय के अनुरूप विभिन्न शैलियों को अपनाया है। शुक्ल जी ने अपने प्रसिद्ध निबन्ध करुणा में विषयानुसार उपयुक्त शैली तुलनात्मक शैली को अपनाया है।[2] करुणा और क्रोध को एक दूसरे के विपरीत बताते हुए तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। इस शैली से विषय गंम्भीर होते हुए भी आसानी से समझ में आ जाता है। तुलनात्मक विधि द्वारा दो विपरीत बिन्दुओं को अलग करके लेखक अपनी बात आसानी से स्पष्ट करने में सक्षम होता है। आचार्य शुक्ल इस में अत्यधिक सफल हुए हैं।

2. सूत्रात्मक शैली– रामचन्द्रशुक्ल जी सूत्रात्मक शैली को अनेक साहित्यिक गूढ ग्रंथियों को सुलझाने में बडी खूबी से प्रयोग करते प्रतीत होते हैं। इस शैली के अन्तर्गत शुक्ल जी पहले सूत्रात्मक विधि से अपनी बात पाठकों के समक्ष रखते हैं फिर अनेक प्रकार के तर्क दे कर अपने वक्तव्य को स्पष्ट करते हैं। इस सूत्र शैली के द्वारा उनकी अभिव्यक्ति में चार चांद लग गए हैं। रस– मीमांसा निबन्ध में शुक्ल जी ने इसी शैली को अपनाया है।[3] सूत्ररूप मेंअपने विषय को रख कर बाद में उस का तर्क सहित व्याख्या करके अपने विषय को स्पष्ट करते हैं। इस शैली से ऐसा सरलता से सम्भव है। कठिन से कठिन विषय भी पाठकों के लिए सरल लगने लगता है।

3. व्याख्यात्मक शैली– शुक्ल जी ने अपने कथ्य को स्पष्ट करने के लिए अपने कुछ निबन्धों में व्याख्यात्मक शैली का भी प्रयोग किया है।इस शैली के द्वारा शुक्ल जी व्याख्या करते हुए अपने मन्तव्य को स्पष्ट करते हैं। व्याख्यात्मक शैली से व्याख्या करते हुए सरल ढंगसे अपनी बात को पाठकों को समझाने में सफल हुए हैं।कविता क्या है –इसी तरह की शैली में लिखा निबन्ध है।[4] करुणा निबन्ध में भी इस प्रकार की शैली देखने को मिलती है। करुणा निबन्ध से एक उदाहरण देखिए–

सामाजिक जीवन की स्थिति और पुष्टि के लिए करुणा का प्रसार आवश्यक है। यदि ध्यान से देखाजाएतो कर्म क्षेत्र में परस्पर सहायता की सच्ची उत्तेजना देने वाली किसी न किसी रूप में करुणा ही दिखाई देगी।

4. विवेचनात्मक शैली– आचार्य शुक्ल विवेचनात्मक शैली के माध्यम से अनेक गम्भीर विषयों को सरलता से पाठकों केसमक्ष रख सकने में सफल हो जाते हैं।क्रोध और घृणा नामक निबन्ध में इस प्रकार की शैली के दर्शन होते है।[5] इस शैली में वे अपने विचारों को बडी सादगी से प्रस्तुत करते हैं। इस शैलीके द्वारा भाषा में जहां गाम्भीर्य दिखाई देता है वही विषय गत क्लिष्टता भी प्रायः समाप्त हो जाती है। एक उदाहरण इस शैली से द्रष्टव्य है–

दूसरे के उपस्थित दुख से उत्पन्न दुख का अनुभव अपनी तीव्रता के कारण मनोविकारों की श्रेणी में माना जाता हैं पर अपने भावी आचरण के द्वारा दूसरे के सम्भाव्य दुख का ध्यान या अनुमान जिसके द्वारा हम ऐसी बातो से बचते है जिनसे अकारण दूसरे को दुख पहुंचे शील या साधारण सद्वृत्ति के

अन्तर्गत समझा जाता है जैसे–उनकी आंखों में शील नही है शील तोडना अच्छा नहीं दूसरों का दुख दूर करना और दूसरों को दुख न पहुंचाना इन दोनो बातों का निर्बाह न करना शील के पालन न करने का दोषी हो सकता है। यदि किसी अवसर पर बडों की कोई बात न मानेगा तो इस ठीक नहीं लगती या उसके अनुकूल चलने में असमर्थ है इस लिए नहीं कि बडों का अकारण जी दुखाए।

5. सूक्ति शैली–अपने निबन्धों में शुक्ल जी सूक्ति शैली का भी प्रयोग करते हैं। करुणा निबन्ध सूक्ति शैली का अच्छा उदाहरण है। निबन्धकार ने अपने कथन को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए इस प्रकार की शैली का प्रयोग किया है। सूक्ति शैली का एक उदाहरण देखिए–

वियोग की दशा में गहरे प्रेमियों को प्रिय के सुख का अनिश्चय ही नहीं कभी कभी घोर अनिष्ट की आशंका तक होती है।[6]

6. भावात्मक शैली–शुक्ल जी के मनोविकार सम्बन्धी निबन्धों में इस प्रकार की भावात्मक शैली प्रायः देखने को मिलती है। इस शैली में वाक्य बडे ही छोटे छोटे होते हैं जिससे विषय सरल और सुबोध हो जाता है। इस शैली में भाव व्यंजना का एक विशेष प्रवाह आ जाता है जिसके कारण विचारों को अच्छे ढंग संगठित कर पाठकों के समक्ष रखा जा सकता है। इस प्रकार की शैली में एक के पश्चात दूसरा विचार आता है जिससे विचारों की एक श्रृंखला सी बनती चली जाती है। शुक्ल जी के करुणा नामक निबन्ध में भी इस शैली का प्रयोग हुआ है।अनेक स्थानों पर उन्होंने करुणा और क्रोध दुख और सुख आदि द्वन्द्वात्मक प्रसंगों का समाधान करने में इस प्रकार की शैली का प्रयोग किया है। उदाहरण देखिए–

मनुष्य अपने लिए संसार आप बनाता है। संसार तो कहने सुनने के लिए है। वास्तव में किसी मनुष्य का संसार तो वे लोग हैं जिनसे उसका संसर्ग या व्यवहार है। अतः ऐसे लोगों मे से किसी का दूर होना उसके संसार के एक प्रधान अंग का कट जाना या जीवन के एक अंग का खंडित हो जाना है। किसी प्रिय या सहृदय के चिर वियोग या मृत्यु के शोक के साथ करुणा या दया का भाव मिलकर चित्त को बहुत व्याकुल करता है।[7]

7. समन्वित समीक्षा शैली– शुक्ल जी ने परम्परावादी आलोचना के स्थान पर एक नई शैली को जन्म दिया। अभी तक किसी बंधे बंधाए नियम के आधार पर गुण दोष विवेचन की प्रणाली विद्यमान थी। शुक्ल जी ने अपनी समन्वित शैली के अन्तर्गत कवि या लेखक की निष्पक्ष भाव से समालोचना की है उन्होंने प्रयत्न किया है कि कोई विशेषता उदघाटित होने से रह न जाए। भारतेन्दु तुलसी जायसी आदि पर लिखित उनके समीक्षात्मक निबन्धों में इस शैली के दर्शन होते हैं।[8]

8. विश्लेषणात्मता–प्रखर आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के गद्यात्मक साहित्य में अनेक शैलियों के दर्शन होते हैं। शुक्ल जी की आलोचनाओं और मनोवैज्ञानिक निबन्धों में विश्लेषणात्मक शैली के दर्शन होते हैं। इस शैली में रेखागणित की तरह एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु की ओर शुक्लजी वर्णन करते हुए आगे बढते हैं।इस शैली के माध्यम से वे मनोभावों और मनोविकारों के अन्तर को विश्लेषण करते हुए अत्यन्त जटिल विषय को बडी प्रवीणता से स्पष्ट करने में सफल हुए हैं। क्रोध और घृणा जैसे क्लिष्ट निबन्धों में इस प्रकार की शैली के दर्शन होते हैं।[9]

9. निगमन शैली– आचार्य रामचन्द्रशुक्ल बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी माने जाते हैं। गद्य में उनका व्यक्तित्व निखर कर सामने आया है। उन्होंने निबन्ध लेखन में अत्यधिक ख्याति अर्जित की। विधा एवं विषय को ध्यान में रख कर वे शैली का चयन करते थे यही कारण है कि उनके गद्य में तरह तरह की शैलियां दिखाई देती हैं। निगमन शैली भी उनमें से एक है।इस शैलीके अन्तर्गत लेखक विचारों को पहले तो सार रूप में पाठक के सम्मुख रखता है फिर उसका सम्यक विस्तार एवं विश्लेषण करता है।इस तरह लगता है कि एक विचार दूसरे की उंगली पकडकर श्रृंखला सी बनाता हुआ आगे बढता है। उदाहरणके रूप में उत्साह नामक निबन्ध को लिया जा सकता है।एक उदाहरण देखिए–

उत्साह वास्तव में कर्म और फल की मिली जुली अनुभूति है। इतना कह कर निगमन शैली द्वारा शुक्ल जी कर्मसाधन और फलप्राप्ति के मध्य में आनन्द की व्याख्या करते हैं और अपनी बात को स्पष्ट करते हैं। इस तरह निगमन शैली के माध्यम से क्लिष्ट लगने वाला विषय भी सरलता से समझ आ जाता है।[10]

10. व्यंग्य और विनोद– विभिन्न शैलियों के अतिरिक्त शुक्ल जी ने अपने निबन्धों में हास्य एवं व्यंग्य का पुट भी दिया है।हास्य और व्यंग्य से अभिव्यक्ति में आकर्षण एवं प्रभाव से उनके निबन्धों में पाठक डूब सा जाता है तथा पाठक निबन्ध जैसी शुष्क विधा में भी तल्लीन हो जाता है। ऐसा आकर्षण शुक्ल जी के निबन्धों में ही देखने को मिलता है। प्रायः मीठी चुटकियां लेते हुए उन्होंने समाज की अनेक बुराईयों पर धावा बोला है।कुछ उदाहरण देखिए–

क. मोटे आदमियो तुम जरा सा दुबले हो जाते अपने आप ही सही तो न जाने कितनी ठठरियों पर मांस चढ जाता

ख. राजधर्म आचार्य धर्म वीर धर्म सब पर सोने का पानी फिर गया सब एकाधर्म हो गए।

11. भाषा में प्रबल अभिव्यंजना शक्ति–शुक्ल जी की भाषा में प्रबल अभिव्यंजना शक्ति है। विचारों की संगठित योजना के कारण उसमें एक कसावट दिखाई देती है जो उसे प्रभावशाली बनाए रखता है। समग्र दृष्टि से उनकी भाषा में गम्भीरता है। विषयानुकूल रमणीयता भी सर्वत्र दिखाई देती है जो निबन्ध जैसी शुष्क विधा में कम ही देखने को मिलती है। लालित्य के साथ साथ भाषा सधी एवं बंधी हुई है प्रत्येक वाक्य अपने स्थान पर निश्चित है और उसे वहां से बदला या हटाया नहीं जा सकता उसका गठन एक पिरामिड की तरह होता है जिसे वहां से दूर नहीं किया जा सकता।[11]

12. संस्कृत निष्ठ भाषा का वर्चस्व– शुक्ल जी की भाषा में तत्सम शब्दों का बाहुल्य है। वास्तव में आचार्य रामचन्द्रशुक्ल गम्भीर चिन्तक होने के कारण इसी भाषा के अभ्यस्त थे जो एक चिन्तक के नाते बडा स्वाभाविक सा लगता है।इसके अतिरिक्त व्यावहारिक और प्रचलित शब्दों को भी अपनी भाषा में यथोचित स्थान दिया है इसमें सन्देह नहीं है।

इस तरह उनकी भाषा शैली में अनेक रूप देखने को मिलते हैं। विषय के अनुसार ही उनकी भाषा एवं शैली देखने को मिलती है। गम्भीर विषय के निबन्धों में भाषा अधिक सधी हुई एवं संस्कृत निष्ठ दिखाई देती है जबकि अनेक निबन्धों में विषय के अनुसार भाषा अधिक चुटकीली एवं मुहावरेदार दिखाई देती है।सन्त कबीर भाषा के डिक्टेटर कहे जाते हैं ।[12] शुक्ल जी को भाषा का स्वामी कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी

संदर्भ सूचि–

1. पाण्डेय गंगाप्रसाद। आलोचक रामचन्द्र शुक्ल पृ 197
2. डॉ नामवर सिंह। चिन्तामणि–3
3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल। रसमीमांसा पृ 87
4. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल। कविता क्या है पृ 17
5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल। क्रोध और घृणा पृ 12
6. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल। करुणा पृ 09
7. उपरोक्त।
8. कुसुम चतुर्वेदी। चिन्तामणि–4 पृ 67
9. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल। क्रोध और घृणा पृ 18
10. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल। उत्साह पृ 14
11. पाण्डेय गंगा प्रसाद। आलोचक रामचन्द्र शुक्ल पृ 79